SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

पर्यावरणीय शिक्षा का समाज पर प्रभावः एक अध्ययन

राजेश गौड़, पी–एचडी., शिक्षा विभाग
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय (केंद्रीय विश्वविद्यालय), बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
राजेश गौड़, पी–एचडी.
E-mail : rajeshgaur.35azm@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 15/07/2025
Revised on : 16/09/2025
Accepted on : 25/09/2025
Overall Similarity : 05% on 17/09/2025

शोध सार

पर्यावरण एक अविभाज्य समष्टि है। भौतिक, जैविक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक तत्वों वाले पारस्परिक क्रियाशील तन्त्रों से इसकी रचना होती है। यह तंत्र अलग–अलग तथा सामूहिक रूप से विभिन्न रूपों में परस्पर संबद्ध होते हैं। भारतीय संस्कृति में पर्यावरण एवं प्रकृति धार्मिक व सामाजिक आस्था के साथ जोड़कर आदर और सम्मान की परंपरा बहुत ही प्राचीन है। प्रकृति की संवेदनशीलता मानव को प्रभावित करती है, परंतु मानव ने औद्योगिक विकास एवं कृषि भूमि के विस्तार की रफ्तार में वनों का विनाश, प्राकृतिक संसाधनों का असंतुलित एवं अति दोहन कर मानव एवं प्रकृति के जीवनोपयोगी संतुलन को बिगाड़ दिया है। प्रस्तुत शोध पत्र में पर्यावरण की व्यापक उपयोगिता एवं मानव समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को रेखांकित करने का प्रयास किया गया है। पर्यावरण एवं प्रकृति संरक्षण के बारे में जो जानकारी सरकारी या गैर सरकारी प्रयासों द्वारा दी जाती है वह शिक्षा को संप्रत्यय से जोड़कर और प्रभावी बनाने का प्रयास किया जा रहा है। सर्वेक्षण अनुसंधान विधि के माध्यम से संकलित किए गए आंकड़ों के विश्लेषण द्वारा यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि पर्यावरण के बारे में जो जानकारी, ज्ञान अर्थात् पर्यावरणीय शिक्षा द्वारा समाज को जागरूक करने का प्रयास है उसमें कुछ ऐसा करने की दिशा में कदम बढ़ाने की आवश्यकता है कि पर्यावरण संरक्षण एवं जीव जंतुओं के संरक्षण के प्रति मानवीय दृष्टिकोण सकारात्मक और संरक्षण वादी बने तभी हम स्वच्छंद वातावरण में स्वस्थ रह पाएंगे और मानव व प्रकृति के संतुलन की निरंतरता बनी रहेगी। शोध कार्य द्वारा यह भी स्पष्ट किया गया है कि पर्यावरण एवं जीव–जंतु संरक्षण योजनाएं कारगर तो हो रही है परंतु जितनी आवश्यकता है, पर्यावरण संतुलन को बनाने के लिए उतनी नहीं। वर्तमान में समाज को पर्यावरणीय संरक्षण

एवं संवर्धन हेतु सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। वृक्षों की अंधा–धुंध कटाई, जहरीले कीटनाशक पदार्थ का उपयोग, रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग एवं मनुष्य की लालची व विस्तारवादी प्रवृत्ति पर्यावरणीय संतुलन को बिगड़ने का कार्य कर रही है। पर्यावरणीय शिक्षा द्वारा समाज एवं समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित कर पर्यावरण के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। पर्यावरणीय शिक्षा व्यक्ति,प्रकृति एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध कराते हुए पर्यावरण सुधार हेतु प्रेरणा प्रदान करती है। पर्यावरणीय शिक्षा के कार्यक्रम में बच्चों से लेकर वृद्धों तक, शिक्षित से लेकर अशिक्षित तक को शिक्षा के विभिन्न स्वरूपों द्वारा जागरुक कर समाज को हरित एवं स्वच्छंद बनाया जा सकता है। हर व्यक्ति, हर समूह, हर समाज, हर समुदाय को पर्यावरण, जैव विविधता एवं प्राकृतिक संसाधन को बेहतर समझने की आवश्यकता है ताकि हम पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन को बढ़ावा दे सकें और आने वाले समय के लिए भी स्वस्थ और अमियवन जीवन प्रदान कर पाए।

मुख्य शब्द

पर्यावरण, प्रकृति, संरक्षण, औद्योगीकरण, लालची प्रवृत्ति, नैसर्गिक.

प्रस्तावना

पर्यावरण एक व्यापक संप्रत्यय है। हम जीवधारियों तथा वनस्पतियों के चारों ओर जो आवरण है, उसे पर्यावरण कहते हैं। पर्यावरण किसी जीव के चारों तरफ घिरे भौतिक एवं जैविक दशाएं तथा उनके साथ अंतःक्रिया को सम्मिलित करता है। मनुष्य जिस प्राकृतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में रहता है, वह सब उसका पर्यावरण होता है। तीव्र जनसंख्या वृद्धि और औद्योगिकीकरण ने मनुष्य की भौतिक आवश्यकता में वृद्धि कर दी परिणामस्वरूप प्राकृतिक संसाधनों का दोहन अत्यंत तीव्रता और अविवेकपूर्ण ढंग से हो रहा है। यही मनुष्य की अनियंत्रित गतिविधियां दिन– प्रतिदिन पर्यावरणी समस्याओं को बढ़ाती जा रही है जिससे परिस्थितिकी संतुलन बिगड़ गया है। यहीं परिस्थितिकी असंतुलन समस्त जीवधारियों एवं वनस्पतियों के लिए चुनौती बन गया है और स्वस्थ जीवन दूभर हो गया है। इस समस्या से निजात पाने के लिए आम जनमानस अर्थात समाज का जागरूक होना अपरिहार्य है। समाज को पर्यावरण से मित्रता करने की जरूरत है। पर्यावरणी विनाश के दृष्टिकोंण को बदलने की जरूरत है। पर्यावरण, पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन की जानकारी पर्यावरणीय शिक्षा की संकल्पना को प्रस्फुटित करती है।

पर्यावरणीय शिक्षा भावी नागरिकों को पर्यावरण के प्रति सजग करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

पर्यावरणीय शिक्षा केवल पर्यावरण के बारे में तथ्यों को प्रसारित करने से कहीं अधिक है; यह एक परिवर्तनकारी प्रक्रिया है जो व्यक्तियों और समाजों को पर्यावरण के प्रति अपने दृष्टिकोण को बदलने, संवर्धन को प्रेरित करने और स्वस्थ, नागरिक के रूप से संलग्न समुदायों के निर्माण में सक्षम बनाती है। यह एक व्यापक प्रक्रिया है जो व्यक्तियों, समुदायों और संगठनों को पर्यावरणीय चुनौतियों को समझने और उनसे निपटने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्रदान करती है।

पर्यावरणीय शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य समाज के सभी वर्गों के बीच पर्यावरण के अनुकूल मानसिकता विकसित करना है, जिससे पर्यावरणीय नैतिकता का विकास हो और जीवन व जैव विविधता के संरक्षण का महत्व स्थापित हो सके। इसका लक्ष्य एक ऐसी वैश्विक आबादी का निर्माण करना है जो पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति जागरूक और चिंतित हो, तथा उनके समाधान के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से काम करने की प्रतिबद्धता और कौशल रखती हो। पर्यावरणीय शिक्षा को केवल एक अलग शैक्षणिक विषय के रूप में नहीं देखा जाता है, बल्कि इसे एक आजीवन सीखने की प्रक्रिया के रूप में बढ़ावा दिया जाना चाहिए जो वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के अस्तित्व के लिए एक स्थायी पर्यावरण सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक है। पर्यावरणीय शिक्षा के महत्वपूर्ण होने का एक कारण यह है कि यह केवल जानकारी देने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोगों के सोचने और व्यवहार करने

के तरीके में एक मौलिक बदलाव लाने का प्रयास करती है। यह व्यक्तियों और समुदायों को निष्क्रिय अवस्था से सक्रिय भागीदारी और प्रणालीगत परिवर्तन की ओर ले जाने का प्रयास करती है, जो केवल संज्ञानात्मक सीखने से कहीं अधिक गहरा सामाजिक प्रभाव दर्शाता है।

पर्यावरण और समाज में सम्बन्ध

पर्यावरण और समाज का बहुत घनिष्ठ संबंध है। व्यक्ति समाज में जन्म लेता है और समाज में ही अपने जीवन की संपूर्ण क्रियाएं करता है इसलिए उसे वातावरण के साथ समायोजन करना पड़ता है। इस समायोजन में शिक्षा उसकी सहायता करती है। शिक्षा का उद्देश्य सामाजिक कुशलता के साथ–साथ पर्यावरणीय समायोजन भी है। व्यक्ति की शक्तियों और क्षमताओं को इस प्रकार विकसित करना कि वह सामाजिक रूप से कुशल बन सके और अपने वातावरण के साथ समायोजन करने की योग्यता विकसित कर सके। जिस समाज में व्यक्ति रहता है, वही समाज समय और परिस्थित के अनुसार यह निश्चित करता है कि व्यक्ति को किस प्रकार की जानकारी और शिक्षा प्रदान की जाए जिससे वह समाज का योग्य, कर्मठ और पर्यावरण का संरक्षक व संवर्धन करने वाला सदस्य बन सके। समाज की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और विस्तारवादी प्रवृत्तियों ने समाज की पर्यावरणीय अति विदोहन की लालची प्रवृत्ति को बढ़ता गया और अनेक प्रकार के दुष्परिणाम सम्मुख आने लगे।

समाज निरंतर गतिशील रहता है। समाज की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक स्थितियों के साथ–साथ पर्यावरणीय स्थितियों में निरंतर परिवर्तन होता रहता है। इस परिवर्तनशीलता का ही परिणाम है कि आज हमारे समाज की संरचना और स्वरूप में भारी परिवर्तन आ गया। आज का समाज वर्तमान से लगभग सौ वर्ष पूर्व के समाज से भिन्न है तथा वह एक हजार वर्ष पूर्व के समाज से बहुत ही भिन्न है। इस अंतराल में जो परिवर्तन हुए उसे आज के समाज और उसे समय के समाज में काफी अंतर आ गया है। कभी–कभी प्रकृति अपने ढंग से सामाजिक परिवर्तन का एक कारक बन जाती है। यह कारक विशेष रूप से उस समय क्रियाशील होता है जब प्रकृति अपना रौद्र रूप धारण करती है। जहां प्रकृति का रौद्र रूप देखने को मिलता है वहां मनुष्य प्रकृति की शक्ति से इतना अधिक प्रभावित होता है कि उसके सामने सर झुका लेता है, उसकी वंदना में लग जाता है। जिस देश या समाज में कविता तथा धर्म की प्रधानता होती है जहां प्रकृति शांत है वहां विज्ञान की उन्नति संभव है। भूकंप, बाढ़, अकाल,महामारी प्रकृति के रौद्र रूप है। इसके साथ ही समाज भी अपनी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को इस कदर बढ़ा लिया कि भौतिक सुख के लिए वह प्रकृति में विद्यमान संसाधनों का अति व्यापकता के साथ विदोहन किया, वनों को जलाया, कीटनाशकों का प्रयोग किया, जीव जंतुओं की आवास को उजाड़ डालें, औद्योगिकरण द्वारा जहरीली गैसें का उत्सर्जन करके वायु को प्रदूषित कर दिया। अन्य अनेक कारण एक दूसरे को प्रभावित करते रहे जिसका प्रदूषण कारी परिणाम सामने दिख रहा है।

पर्यावरणीय शिक्षा

पर्यावरणीय शिक्षा को व्यापक रूप से एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है जो व्यक्तियों और समुदायों को अपने पर्यावरण के बारे में ज्ञान प्राप्त करने, पर्यावरणीय मुद्दों की जांच करने के लिए महत्वपूर्ण कौशल विकसित करने और इसके प्रबंधन के संबंध में बुद्धिमान, सूचित निर्णय लेने में सशक्त बनाती है। यह ज्ञान, जागरूकता, आवश्यक कौशल, सकारात्मक दृष्टिकोण, मजबूत प्रेरणाएँ और पर्यावरणीय चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना करने और जिम्मेदार कार्रवाई करने के लिए अटूट प्रतिबद्धता विकसित करती है।

यूनेस्को के अनुसार पर्यावरण शिक्षा व्यक्ति, प्रकृति एवं समाज की प्रति अपने कर्तव्यों का बोध कराते हुए पर्यावरण सुधार हेतु प्रेरणा प्रदान करती है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के पर्यावरण शिक्षा अधिनियम–1970 में पर्यावरण शिक्षा को इस प्रकार बताया गया है– ''पर्यावरण शिक्षा से अभिप्राय उस शैक्षिक प्रक्रिया से है जो मानव का संबंध उसके प्राकृतिक व स्वनिर्मित वातावरण से स्थापित करती है। इसमें जनसंख्या, प्रदूषण, संसाधन आवंटन व निरूशोषण, संरक्षण, यातायात, प्रौद्योगिकी तथा शहरी व ग्रामीण नियोजन का समस्त मानवीय वातावरण से संबंध निहित है।''

इस प्रकार पर्यावरणीय शिक्षा व्यवस्थित रूप से निर्णय लेने की आदतों को बढ़ावा देती है और पर्यावरणीय गुणवत्ता को बनाए रखने और सुधारने से संबंधित व्यवहार संहिता स्थापित करती है। इसमें सीखने की प्रक्रियाएँ शामिल हैं जो पर्यावरणीय चुनौतियों के बारे में ज्ञान और जागरूकता को बढ़ाती हैं, साथ ही इन मुद्दों का सामना करने और प्रबंधन करने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने में सहायता करती हैं। ऐतिहासिक रूप से, पर्यावरणीय शिक्षा को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को संचित पर्यावरणीय ज्ञान के हस्तांतरण के रूप में देखा गया है। अधिक व्यापक रूप से, इसे पर्यावरणीय मामलों के संबंध में वैश्विक समुदाय को दी जाने वाली शिक्षा के रूप में समझा जाता है, जिससे वे मौजूदा समस्याओं की पहचान कर सकें और उनका समाधान लागू कर सकें, साथ ही भविष्य की समस्याओं को सक्रिय रूप से रोक सकें।

स्थायी समाधान खोजने के लिए एक समग्र और एकीकृत शैक्षिक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

पर्यावरणीय नैतिकता का विकास

पर्यावरणीय शिक्षा का एक मूलभूत लक्ष्य व्यक्तियों के भीतर पर्यावरणीय नैतिकता विकसित करना है, उन्हें जैव विविधता संरक्षण के महत्वपूर्ण महत्व पर शिक्षित करना है। इसमें पर्यावरणीय जिम्मेदारी और प्रबंधन की गहरी भावना स्थापित करना शामिल है। इस नैतिक विकास के लिए पर्यावरणीय क्षरण के कारणों और प्रभावों की गहरी समझ आवश्यक है, जिससे शिक्षार्थियों को इन जटिल चुनौतियों का सामना करने में अपनी भूमिका और क्षमता के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिल सके।

''पर्यावरणीय नैतिकता'' के एक मुख्य उद्देश्य के रूप में लगातार उल्लेख का अर्थ है कि पर्यावरणीय शिक्षा केवल संज्ञानात्मक सीखने या कौशल अधिग्रहण से परे है। इसका उद्देश्य एक नैतिक ढाँचा विकसित करना है जो आंतरिक रूप से व्यक्तिगत और सामूहिक कार्यों को पर्यावरण संरक्षण और स्थायी जीवन की ओर निर्देशित करता है। इस मूलभूत नैतिक प्रतिबद्धता के बिना, ज्ञान और व्यावहारिक कौशल अकेले स्थायी पर्यावरण–समर्थक व्यवहार में अनुवाद करने के लिए अपर्याप्त या असंगत साबित हो सकते हैं, खासकर जब प्रतिस्पर्धी आर्थिक, सामाजिक या व्यक्तिगत दबावों का सामना करना पड़ता है। यह पर्यावरणीय शिक्षा के प्रभाव के एक गहरे, अधिक स्थायी पहलू पर प्रकाश डालता है।

औपचारिक शिक्षा प्रणाली में पर्यावरणीय शिक्षा

भारत की औपचारिक शिक्षा प्रणाली के भीतर पर्यावरणीय शिक्षा वर्तमान में दोहरे दृष्टिकोण के माध्यम से प्रदान की जाती है। इसे प्राथमिक कक्षाओं में एक अलग विषय, पर्यावरण अध्ययन (ईवीएस) के रूप में पढ़ाया जाता है, जबकि मध्य और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर पर्यावरणीय विषयों को मुख्य विषयों में रणनीतिक रूप से एकीकृत किया जाता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या फ्रेमवर्क (एनसीएफ) 2005 ने कक्षा 3–5 के लिए ईवीएस की शुरुआत की, जिसमें पाठ्यक्रम को बच्चे के जीवन से सीधे संबंधित विषयों जैसे परिवार और दोस्त, भोजन, आश्रय, पानी, यात्रा और दैनिक गतिविधियों के इर्द–गिर्द संरचित किया गया। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य पर्यावरण के मूलभूत ज्ञान और प्रशंसा को विकसित करना है, इसे एक महत्वपूर्ण संसाधन के रूप में पहचानना और जिम्मेदार प्रबंधन पर जोर देना है। उच्च शिक्षा स्तरों के लिए, पाठ्यक्रम (जैसे कक्षा XII) में पर्यावरणीय विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है, जिसमें युगों के माध्यम से पर्यावरण, पारिस्थितिक अवधारणा और मुद्दे, पर्यावरण पर मानव प्रभाव, समकालीन पर्यावरणीय मुद्दे (प्रदूषण और प्राकृतिक आपदाओं को कवर करते हुए),पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास, पर्यावरण प्रबंधन (नैतिकता और कानून सहित), और ऊर्जा और पर्यावरण शामिल हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 पर्यावरणीय शिक्षा को एक अंतःविषय क्षेत्र के रूप में दृढ़ता से बढ़ावा देती है, जिसमें स्कूली शिक्षा के सभी चरणों में विभिन्न विषय विषयों में पर्यावरणीय अवधारणाओं का समावेश शामिल है। एनईपी 2020 के तहत एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक बदलाव पारंपरिक सामग्री–आधारित निर्देश पर अनुभवात्मक और कौशल–आधारित सीखने पर जोर देना है। अंतःविषय एकीकरण के विशिष्ट उदाहरणों में गणित में पर्यावरणीय

अवधारणाओं को शामिल करना, पर्यावरणीय जागरूकता और आउटरीच अभियानों के लिए भाषा कला का उपयोग करना, और सामाजिक विज्ञान के भीतर स्थानीय वनस्पतियों/जीवों और परिदृश्य पर जलवायु परिवर्तनों के दीर्घकालिक प्रभाव का अध्ययन करना शामिल है।

अनौपचारिक और गैर–औपचारिक पर्यावरणीय शिक्षा

गैर–औपचारिक शिक्षा में पारंपरिक स्कूल प्रणाली के बाहर संरचित सीखने की गतिविधियाँ शामिल हैं, जैसे कि निरक्षर या कामकाजी व्यक्तियों के लिए वयस्क शिक्षा कार्यक्रम। ये कार्यक्रम अक्सर मानव–पर्यावरण संबंधों के व्यावहारिक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिनमें कृषि रसायनों के उचित उपयोग और जल और मृदा प्रदूषण को समझना जैसे विषय शामिल हैं। दूसरी ओर, अनौपचारिक शिक्षा रोज़मर्रा की गतिविधियों, जनसंचार माध्यमों (पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, इंटरनेट) के संपर्क और आकस्मिक बातचीत के माध्यम से स्वतः होती है। गैर–औपचारिक गतिविधियों में संगठित कार्यशालाएँ, निर्देशित अनुभव और संग्रहालयों या प्रकृति केंद्रों में व्याख्यात्मक प्रदर्शन भी शामिल हो सकते हैं।

गैर–औपचारिक और अनौपचारिक पर्यावरणीय शिक्षा पर महत्वपूर्ण जोर और सफल समुदाय–आधारित कार्यक्रमों के विस्तृत उदाहरण एक महत्वपूर्ण समझ को रेखांकित करते हैं। प्रभावी पर्यावरणीय शिक्षा पारंपरिक संस्थागत कक्षाओं की सीमाओं से कहीं आगे तक फैली हुई है। ये पहल रणनीतिक रूप से स्थानीय संदर्भों का लाभ उठाती हैं, पारंपरिक ज्ञान को एकीकृत करती हैं, और व्यावहारिक कौशल विकसित करने और सामूहिक कार्रवाई को प्रोत्साहित करने के लिए सहकर्मी से सहकर्मी सीखने को बढ़ावा देती हैं। यह दृष्टिकोण इस बात पर प्रकाश डालता है कि समुदाय स्वयं एक गतिशील, जीवित कक्षा और स्थायी प्रथाओं को लागू करने के लिए एक महत्वपूर्ण एजेंट के रूप में कार्य करता है, यह दर्शाता है कि वास्तविक दुनिया का प्रभाव अक्सर स्थानीयकृत, सहभागी प्रयासों से उत्पन्न होता है।

भारत में पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति सामजिक जागरूकता

सर्वेक्षणों से संकेत मिलता है कि भारतीयों का एक बड़ा बहुमत (85 प्रतिशत) जलवायु–संबंधी खतरों, जिनमें गंभीर गर्मी की लहरें, सूखा और बाढ़ शामिल हैं, के बारे में महत्वपूर्ण चिंता व्यक्त करता है। 90 प्रतिशत से अधिक भारतीय हरित मुद्दों और जलवायु कार्रवाई को संबोधित करने के लिए नीतियों की वकालत करते हैं। जलवायु परिवर्तन और पर्यावरणीय चिंताओं को भारतीयों के लिए नंबर एक चुनौती माना जाता है, जिसमें 56 प्रतिशत इसे अपनी शीर्ष तीन चिंताओं में से एक मानते हैं।

हालांकि, एक उल्लेखनीय ज्ञान का अंतर बना हुआ है। राष्ट्रीय स्तर पर केवल 41 प्रतिशत भारतीय ग्लोबल वार्मिंग के बारे में "बहुत कुछ या कुछ" जानने की रिपोर्ट करते हैं। एक संक्षिप्त स्पष्टीकरण प्राप्त करने के बाद भी, जबकि 82 प्रतिशत का मानना है कि ग्लोबल वार्मिंग हो रही है, केवल 54 प्रतिशत इसे "मुख्य रूप से मानवीय गतिविधियों" के कारण मानते हैं। जागरूकता का स्तर भारत भर में भौगोलिक रूप से भिन्न होता है। उदाहरण के लिए, गुजरात में 52 प्रतिशत लोग ग्लोबल वार्मिंग के बारे में ज्ञान की रिपोर्ट करते हैं, जबकि महाराष्ट्र में केवल 33 प्रतिशत। इसी तरह, ग्लोबल वार्मिंग के मानव–जनित होने की समझ में काफी भिन्नता है, तिरुवनंतपुरम में 68 प्रतिशत से लेकर उत्तर प्रदेश के खेरी में 43 प्रतिशत तक।

कुल मिलाकर, 92 प्रतिशत भारतीय पर्यावरण के लिए चिंतित हैं, जिसमें 66 प्रतिशत को लगता है कि यह जोखिम में है। जबकि पारंपरिक भारतीय संस्कृति में पुन प्रतिशत उपयोग और पुनर्चक्रण की एक मजबूत मानसिकता निहित है, इन प्रथाओं का कार्बन उत्सर्जन जैसे बड़े पैमाने के मुद्दों पर अपेक्षाकृत कम प्रभाव पड़ता है; औसत भारतीय नवीकरणीय ऊर्जा में संक्रमण जैसे अधिक प्रभावशाली कार्यों से काफी हद तक अनभिज्ञ रहता है।

उपलब्ध डेटा एक विरोधाभास प्रस्तुत करता है, पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में उच्च स्तर की व्यक्त चिंता और चिंता (85 प्रतिशत से 92 प्रतिशत तक) है, साथ ही जलवायु प्रभावों का एक महत्वपूर्ण व्यक्तिगत अनुभव (78 प्रतिशत) भी

है। फिर भी, यह भावनात्मक और अनुभवात्मक जागरूकता पर्याप्त ज्ञान अंतराल के साथ सह–अस्तित्व में है, विशेष रूप से जलवायु परिवर्तन के मानवजनित कारणों (केवल 54 प्रतिशत इसे मानवीय गतिविधियों के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं) और उच्च–प्रभाव वाले समाधानों को समझने के संबंध में। यह ''जागरूकता–ज्ञान अंतर'' एक महत्वपूर्ण खोज है, जो इंगित करता है कि जबकि लोग प्रभावों को महसूस करते हैं और चिंतित हैं, अंतर्निहित तंत्रों और प्रभावी बड़े पैमाने के समाधानों की उनकी समझ अक्सर अधूरी होती है। यह इस विशिष्ट अंतर को पाटने के लिए पर्यावरणीय शिक्षा के भीतर एक अधिक लक्षित और वैज्ञानिक रूप से आधारित दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल देता है।

सामाजिक परिवर्तन में पर्यावरणीय शिक्षा की भूमिका

पारिस्थितिकी–शिक्षा को एक सामंजस्यपूर्ण समाज को बढ़ावा देने में एक प्राथमिक कारक के रूप में मान्यता प्राप्त है और विनिर्माण प्रक्रियाओं को कुशलतापूर्वक बढ़ाने और व्यवस्थित करने का एक साधन है। यह शैक्षिक गतिविधियों का एक व्यापक सेट है जिसका उद्देश्य पर्यावरणीय जागरूकता विकसित करना है, जो बदले में व्यक्तियों को ठोस कार्रवाई के लिए प्रेरित करता है।

यह व्यक्तियों को मानवजनित दबावों और उनके प्रतिकूल प्रभावों की विशिष्टताओं के बारे में आवश्यक ज्ञान से लैस करता है, जिससे पर्यावरणीय संस्कृति और पारिस्थितिक सोच का विकास होता है। इसके अलावा, पर्यावरणीय शिक्षा एक शैक्षिक ढांचे के रूप में कार्य करता है जिसे विशेष रूप से हाशिए पर पड़े और उत्पीड़ित समूहों को सशक्त बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह सक्रिय भागीदारी और संवाद को बढ़ावा देकर इसे प्राप्त करता है, जिससे महत्वपूर्ण चेतना का निर्माण होता है जो व्यक्तियों को अपने समुदायों के भीतर प्रणालीगत अन्याय को पहचानने और चुनौती देने में सक्षम बनाता है। इस दृष्टिकोण ने पारंपरिक शैक्षिक मॉडलों की तुलना में जागरूकता और व्यवहार परिवर्तन को बढ़ावा देने में अधिक प्रभावशीलता का प्रदर्शन किया है।

स्पष्ट रूप से पर्यावरणीय शिक्षा को व्यापक सामाजिक लक्ष्यों से जोड़ते हैं जो केवल पर्यावरण संरक्षण से परे हैं। इन लक्ष्यों में एक सामंजस्यपूर्ण समाज को बढ़ावा देना, विनिर्माण दक्षता में सुधार करना, और महत्वपूर्ण रूप से, हाशिए पर पड़े और उत्पीड़ित समूहों को प्रणालीगत अन्याय को चुनौती देने के लिए सशक्त बनाना शामिल है। इसका तात्पर्य है कि पर्यावरणीय समस्याएँ अक्सर सामाजिक असमानताओं और शक्ति असंतुलन से अविभाज्य रूप से जुड़ी होती हैं। इसलिए, पर्यावरणीय शिक्षा, जब समग्र रूप से परिकल्पित की जाती है, तो समुदायों को सशक्त बनाकर इस मुद्दे को संबोधित कर सकती है। पर्यावरणीय शिक्षा अक्सर एक अलग विषय के रूप में मानी जाती है, जिससे पर्यावरणीय मुद्दों की परस्पर जुड़ी प्रकृति की समग्र समझ सीमित हो जाती है।

सामुदायिक सहभागिता

सरकार, गैर–सरकारी संगठनों और शैक्षिक संस्थानों के बीच सहयोग को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जिससे संसाधनों और विशेषज्ञता का साझाकरण हो सके। कार्यशालाओं और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से सामुदायिक जुड़ाव को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, क्योंकि समुदाय वास्तविक परिवर्तन के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल है। छात्रों के नेतृत्व वाली पहलों जैसे इको–क्लब, अपशिष्ट प्रबंधन और ऊर्जा ऑडिट को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जिससे युवा नेताओं को सशक्त बनाया जा सके।

निष्कर्ष

पर्यावरणीय शिक्षा भारत में सतत् विकास के लिए एक महत्वपूर्ण आधारशिला के रूप में उभरी है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि पर्यावरणीय शिक्षा में व्यक्तियों और समाज को बदलने की गहन क्षमता है, जो केवल पर्यावरणीय ज्ञान प्रदान करने से कहीं अधिक है; यह पर्यावरणीय नैतिकता को विकसित करती है, महत्वपूर्ण कौशल प्रदान करती है, और स्थायी व्यवहारों को प्रेरित करती है। भारत का ऐतिहासिक संदर्भ, जिसमें पर्यावरण के प्रति प्राचीन सम्मान और सर्वोच्च न्यायालय के जनादेश द्वारा औपचारिक शिक्षा में पर्यावरणीय शिक्षा का अनिवार्य एकीकरण शामिल है, इस क्षेत्र के विकास के लिए एक अनूठा मार्ग प्रदान करता है।

हालांकि, विश्लेषण से पता चलता है कि भारतीय आबादी में पर्यावरणीय खतरों के बारे में उच्च स्तर की चिंता और व्यक्तिगत अनुभव है, फिर भी जलवायु परिवर्तन के मानवजनित कारणों और बड़े पैमाने पर समाधानों के बारे में ज्ञान के महत्वपूर्ण अंतराल और गलत धारणाएं बनी हुई हैं। इसके अतिरिक्त, जागरूकता से व्यवहार परिवर्तन तक का संक्रमण जटिल है, जो व्यक्तिगत मानदंडों, सामाजिक प्रभावों और भावनात्मक जुड़ाव जैसे कारकों से प्रभावित होता है। भारत में पर्यावरणीय शिक्षा की प्रभावशीलता को अधिकतम करने के लिए एक समग्र और अनुकूलनीय रणनीति आवश्यक है। इसमें पाठ्यक्रम को स्थानीय संदर्भों और उभरती पर्यावरणीय चुनौतियों के अनुरूप बनाना, शिक्षकों के लिए व्यापक क्षमता निर्माण प्रदान करना, और औपचारिक, गैर–औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा चौनलों में अभिनव प्रौद्योगिकियों का लाभ उठाना शामिल है। सरकार, गैर–सरकारी संगठनों और समुदायों के बीच बहु–हितधारक सहयोग, स्थानीय ज्ञान को एकीकृत करते हुए, व्यापक और स्थायी सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए महत्वपूर्ण है। निरंतर अनुसंधान और मूल्यांकन, विशेष रूप से दीर्घकालिक व्यवहारिक प्रभावों पर केंद्रित, भविष्य के ईई कार्यक्रमों को सूचित और परिष्कृत करने के लिए आवश्यक होगा। पर्यावरणीय शिक्षा में निवेश करके, भारत एक ऐसी पीढ़ी का पोषण कर सकता है जो न केवल पर्यावरणीय रूप से साक्षर है, बल्कि अपने ग्रह की सुरक्षा और एक स्थायी भविष्य के निर्माण के लिए सक्रिय रूप से प्रतिबद्ध बने।

संदर्भ सूची

1. एण्डरसन, एस. (2020) आवश्यकता एक भौगोलिक अध्ययन, *IOSR Journal*, 28(12), 126, http://iosrjournal.org/paper, Accessed date 28/03/2022.
2. गुप्ता, अरुणा (2013) *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक,* आलोक प्रकाशन, अमीनाबाद, लखनऊ।
3. लाल, रमन बिहारी (2009) *शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत,* रस्तोगी पब्लिकेशंस, मेरठ।
4. पचौरी, गिरीश (1911) *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक,* इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
5. पाण्डेय, संदीप कुमार (2025) *शिक्षा के विविध आयाम,* संकल्प प्रकाशन कानपुर, उत्तर प्रदेश।
6. पाठक, पी.डी. (1974) *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
7. शर्मा, सरोज (2023) *भारतीय ज्ञान परंपरा (विविध आयाम),* शिप्रा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली।
8. त्यागी, जी. एस.डी. (2009) *शिक्षा के सिद्धांत,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
9. ओड़, लक्ष्मी लाल के. (2014) *शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि,* राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर।

****